समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ मार्च २०२६ • वर्ष : २९ • अंक : ९ (निरंतर अंक : ३४५) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

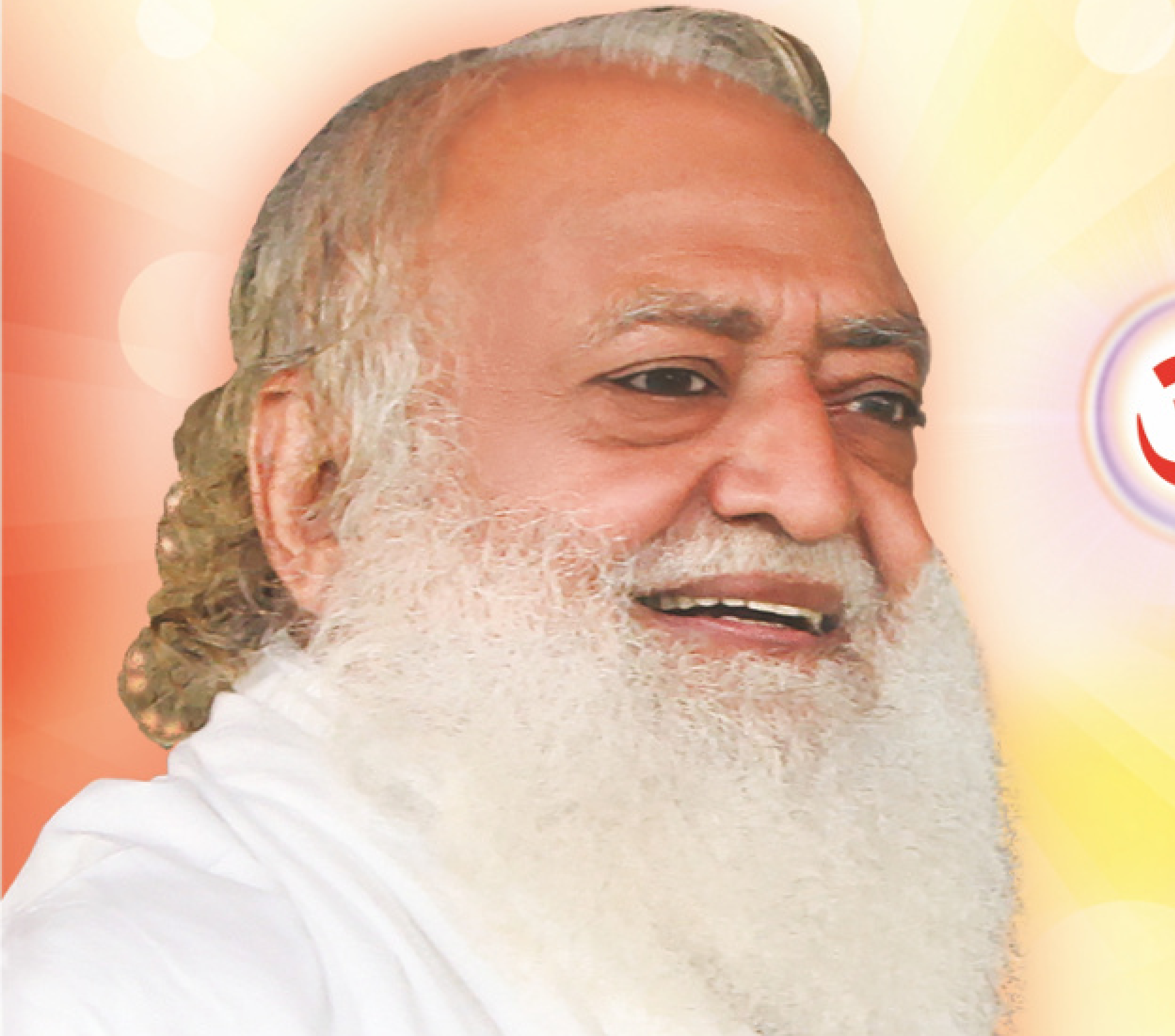

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

हे मानव ! तू भी अपने जीवन में उस ब्रह्मविद्या को ला जिस विद्या से मुक्ति का अनुभव होता है, जिस विद्या से 'सबमें एक और एक में सब' के दर्शन हो जाते हैं । - पूज्य बापूजी

सनातन धर्म की पताका फहरानेवाले बापूजी को मिले न्याय पढ़ें पृष्ठ ९

जब हम बैठे थे सुखों में, तू सुखा रहा था तन को। जब हम बैठे थे घरों में, तू भुला रहा था मन को॥
जग में रहकर सब भूला, न भोजन चाहा न पानी। तेरे तन-मन-धन की तपस्या, तेरे जीवन की कुर्बानी॥

ऊँचे-में-ऊँचा लक्ष्य बना लो

- पूज्य बापूजी

हे साधक ! तू ऊँचे-में-ऊँचा लक्ष्य बना ले और तेरी रग-रग में उस लक्ष्य-प्राप्ति का प्रबल उत्साह पैदा कर दे। जब तक मंजिल तय नहीं होती तब तक रुक मत और अजायाँ (निरर्थक) समय मत गँवा। ध्यान में अद्भुत शक्ति है। पुराने संस्कारों को मिटाकर संस्कारों का स्वामी हो जा, अंतःकरण का स्वामी हो जा, मन का स्वामी हो जा। तुच्छ जीव वह है जिसको मन नचाता रहता है, मध्यम जीव वह है जो कभी मन को अपने अनुकूल करता है कभी मन के भाव में बह जाता है और उत्तम परमेश्वरस्वरूप वे हो गये जिन्होंने ध्यान और आत्मविचार के द्वारा अंतःकरण को बाधित कर दिया। जिन्होंने मन को अपने अनुकूल कर लिया, मन पर, इन्द्रियों पर स्वामित्व पा लिया, वे तो नारायण का स्वरूप हो जाते हैं। हे नर ! तू नारायण का स्वरूप होने के लिए संसार में आया है। अपने उच्च आदर्श को भूलना मत। इस छोटे-से जीवन में, छोटी नालियों में (इन्द्रियों के भोग-विकारों में) बहनेवाले व्यक्तियों को देखकर अपने को उनका साथी मत मानना। तू तो उच्च लक्ष्यवालों का साथी है, तू तो योगियों का साथी है, तू तो ऋषियों का साथी है, तू तो परमेश्वर का साथी है, तू तो परमेश्वर का अमृतपुत्र है ! ॐ... ॐ... ॐ...

रजि. समाचार पत्र

लोक कल्याण सेतु

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २९ अंक : ९

निरंतर अंक : ३४५ आवधिकता : मासिक

प्रकाशन दिनांक : १५ मार्च २०२६ मूल्य : ₹ ४.५०

पृष्ठ संख्या : २८ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

सम्पर्क पता :

'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ६१२१०७३९

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $ ५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $ १२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

✲ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ✲

अनादि	DIGIANA DIVYAJYOTI		सेवाकार्य भी	
रोज सुबह ६:३० व रात्रि १०.३० बजे	रोज रात्रि १० बजे	Asharamji Bapu	Asharamji Ashram	Mangalmay Digital
		यूट्यूब चैनल्स		

✲ 'अनादि' चैनल टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है। ✲ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

लोक कल्याण सेतु ई-मैगजीन के रूप में भी पढ़ सकते है। ई-मैगजीन अथवा हार्ड कॉपी के सदस्य बनने के लिए क्लीक करो...

www.lokkalyansetu.org

लोक कल्याण सेतु रुद्राक्ष मनका योजना :

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

इस अंक में...

- **विवेक की सिंचाई व रक्षा से लगता है अविनाशी फल...**

कवर स्टोरी ईश्वर का अनुभव करने के लिए आवश्यक है कि नित्य क्या है, अनित्य क्या है, शाश्वत क्या है, नश्वर क्या है, मैं कौन हूँ और वास्तव में मेरा कौन है - यह विवेक पैदा हो जाय। विवेक पैदा हो जाय और वह टिकना भी चाहिए... ४

- विदेशी भी अपना रहे हैं सनातन धर्म – मोहन साहू............ ६
- सीताजी की तो सभीको आवश्यकता है........................ ८
- सबसे कठोर दंड.. ९
- 'अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए'........................ ११
- सनातन धर्म की पताका फहरानेवाले बापूजी को............ १३
- मातृ-पितृ पूजन दिवस हेतु शुभकामना संदेश............... १३
- मन की अथाह शक्ति... १४
- भारत के सबसे सुनियोजित धर्मांतरणकारी तंत्र का हुआ पर्दाफाश – आदित्य ठाकुर...................... १६
- सुर्खियों में.. १९
- बापूजी की शरण में आने से जीवन को मिली सही दिशा – पवन नारायण पोलपेल्लीवार......................... १५
- वनस्पतियों के पत्तों के स्वास्थ्य-लाभ......................... २०
- इन तिथियों व योगों का लाभ अवश्य लें........................ २२
- बाल्यकाल से ही भक्ति का प्रारम्भ............................ २४
- फिर तो रात-दिन परमेश्वर का भजन होता है............... २६

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम | **प्रकाशक :** राकेशसिंह आर. चंदेल | **मुद्रक :** विवेक सिंह चौहान | **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) | **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५ | **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी

Email: lokkalyansetu@gmail.com, ashramindia@ashram.org Website: www.lokkalyansetu.org, www.ashram.org, www.asharamjibapu.org

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

शांति की खोज में विदेशी भी अपना रहे हैं

सनातन धर्म

अन्य धर्मों के सत्यान्वेषी लोग भी सनातन धर्म की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते रहे हैं तथा उसे हृदयपूर्वक अपनाते रहे हैं। बेल्जियम के फादर कामिल बुल्के, यू.के. के प्रसिद्ध गायक जॉर्ज हैरिसन, अमेरिका के प्रख्यात संगीतकार जेरी गार्सिया, अमेरिकी उपन्यासकार जे.डी. सैलिंजर, अमेरिका की संगीतज्ञ एलिस कोल्ट्रेन आदि कई ऐसी प्रसिद्ध हस्तियाँ हैं जिनका सनातन संस्कृति की महानता को देखकर सिर झुक गया और वे उसके अनुयायी बन गये।

....

सनातन धर्म एकमात्र ऐसा है जो अमुक काल पहले किसीके द्वारा स्थापित नहीं किया गया अपितु यह अनादिकालीन ईश्वरीय विधान है, जो मत, पंथ, जाति, सम्प्रदाय के भेदभाव से परे प्राणिमात्र का परम मंगल चाहता है। यही कारण है कि अन्य धर्मों के सत्यान्वेषी लोग भी सनातन धर्म की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते रहे हैं तथा उसे हृदयपूर्वक अपनाते रहे हैं। बेल्जियम के फादर कामिल बुल्के, यू.के. के प्रसिद्ध गायक जॉर्ज हैरिसन, अमेरिका के प्रख्यात संगीतकार जेरी गार्सिया, अमेरिकी उपन्यासकार जे.डी. सैलिंजर, अमेरिका की संगीतज्ञ एलिस कोल्ट्रेन आदि कई ऐसी प्रसिद्ध हस्तियाँ हैं जिनका सनातन संस्कृति

सीताजी की तो सभीको आवश्यकता है

परम शांतस्वरूपा देखो तो सीता हैं और वात्सल्यमयी, करुणामयी मैया देखो तो सीता हैं। सीताजी में वात्सल्य, संयम दोनों हैं। भक्तिमार्गवालों के लिए सीताजी वात्सल्यमयी माँ और ज्ञानमार्गियों के लिए शांतिप्रदायक माँ, योगमार्गवालों के लिए एकांत, एकाग्रता बढ़ा के अपने स्वरूप में पहुँचानेवालीं माँ !

....

२५ अप्रैल को सीता नवमी है। सीताजी का आध्यात्मिक विवेचन समझते हैं पूज्य बापूजी के सत्संग से :

भक्तिमार्गी हो, चाहे योगमार्गी हो, चाहे ज्ञानमार्गी हो... सीताजी की तो सभीको जरूरत है। परम शांतस्वरूपा देखो तो सीता हैं और वात्सल्यमयी, करुणामयी मैया देखो तो सीता हैं। सीताजी में वात्सल्य, संयम दोनों हैं। भक्तिमार्गवालों के लिए सीताजी वात्सल्यमयी माँ और ज्ञानमार्गियों के लिए शांतिप्रदायक माँ, योगमार्गवालों के लिए एकांत, एकाग्रता बढ़ा के अपने स्वरूप में पहुँचानेवालीं माँ !

पतंजलि महाराज ने कहा :

तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम् ॥

(पातंजल योगदर्शन : १.३)

संयम और साधना करके अपने स्वरूप में, समाधि में पहुँचो।

तो कर्म, उपासना, ज्ञान के द्वारा और अपने-अपने गुरु में इष्टबुद्धि करनेवालों को गुरु के द्वारा भी तत्त्वज्ञान हो जाता है – भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है। मेरे को हुआ और कइयों को होता है। तो सीता शांतिरूपा भी हैं, ज्ञानरूपा भी हैं, वात्सल्यरूपा भी हैं। कर्मयोगी के लिए भी सीता मैया आश्रय देती हैं।

आगें रामु लखनु बने पाछें।
तापस बेष बिराजत काछें ॥
उभय बीच सिय सोहति कैसें।
ब्रह्म जीव बिच माया जैसें ॥

'आगे श्रीरामजी हैं, पीछे लक्ष्मणजी सुशोभित

नालंदा साहित्य उत्सव में वक्ताओं ने किया आह्वान

अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए

नालंदा साहित्य उत्सव में वक्ताओं ने इस बात को लेकर चिंता जतायी कि हमारे देश का युवा और सम्पन्न वर्ग अपनी ही मिट्टी की बोली का उच्चारण करने में हीन भावना महसूस करता है। कारगिल युद्ध के नायक श्री जयराम सिंह ने कहा : ''दुनिया की कोई भी भाषा कितनी भी आधुनिक क्यों न हो, वह मातृभाषा का स्थान नहीं ले सकती। इतिहास उधर ही मुड़ता है जिस ओर युवा पीढ़ी चलती है। इसलिए युवाओं को अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए।''

किसी भी देश के नागरिकों में जितने अंश में अपनी मातृभाषा तथा क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति प्रेम व आदर होगा उतने अंश में उस राष्ट्र की अस्मिता एवं सांस्कृतिक विरासत संरक्षित रहेगी। हाल ही में सम्पन्न हुए नालंदा साहित्य उत्सव में वक्ताओं ने इस बात को लेकर चिंता जतायी कि हमारे देश का युवा और सम्पन्न वर्ग अपनी ही मिट्टी की बोली का उच्चारण करने में हीन भावना महसूस करता है। कारगिल युद्ध के नायक श्री जयराम सिंह ने कहा : ''दुनिया की कोई भी भाषा कितनी भी आधुनिक क्यों न हो, वह मातृभाषा का स्थान नहीं ले सकती। इतिहास उधर ही मुड़ता है जिस ओर युवा पीढ़ी चलती है। इसलिए युवाओं को अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए।''

मगही भाषा के विद्वान श्री उमेश प्रसाद ने कहा कि ''विडम्बना यह है कि जो लोग ऊँचे पदों पर बैठते हैं या खुद को बहुत पढ़ा-लिखा मानते हैं उन्हें अपनी क्षेत्रीय भाषा बोलने में बेइज्जती महसूस होती है। हम अपनी मातृभाषा को छोड़कर दूसरी भाषाओं के पीछे भाग रहे हैं।''

मन की अथाह शक्ति

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

“मनुष्य में बहुत शक्ति है। शरीर का किया हुआ कोई बड़ी बात नहीं, मन से किया हुआ बहुत जोरदार होता है। तुम्हारे मन को परमात्मा के रास्ते का थोड़ा मार्गदर्शन मिल जाय तो तुम तो खुशहाल हो सकते होसाथ ही तुम जिस कुल में पैदा हुए हो उसके पितरों का भी बेड़ा पार कर सकते हो और आनेवाले बेटे-बेटियों का भी कल्याण कर सकते हो ऐसा ब्रह्मज्ञान का और योग का प्रसाद तुम पा सकते हो।

....

सिंध में एक मुसलमान माई हो गयी, उसके जीवन से ऊँचाई की खबरें मिलती थीं। वहाँ एक फकीर थे। उन्होंने सोचा कि 'हम तो फकीर हैं, संत हैं, भक्ति करते हैं लेकिन यह मछुआरिन घर में रहती है, इसका पति तो मच्छियाँ मारता है फिर यह माई महान कैसे ? जाऊँ जरा, मैं देखता हूँ।' वे गये उस माई के पास तो माई ने आवभगत की, उनको जलपान कराया, उनका सत्कार किया। फिर माई ने कहा : ''चलो मक्का-मदीना नमाज पढ़ने।''

फकीर बोले : ''नमाज का आज आखिरी दिन है और मक्का कोसों दूर है।''

''कोई बात नहीं, आँखें बंद करो पहुँच जाते हैं।''

आँखें बंद कीं और खोलीं तो मक्का में। फकीर कहते हैं : ''वाह !...''

वहाँ लोग नमाज पढ़ते हैं, सिजदा करते हैं - सिर झुकाते हैं पर वह माई सिर झुकाने के बजाय पालना हिला रही थी। मस्जिद में पालना तो था नहीं, पालना हिलाने के भाव से हाथ हिला रही थी।

फकीर पूछते हैं : ''क्या कर रही हो ?''

बोली : ''बेटे को छोड़ के आयी हूँ, वह रो रहा है तो उसको झूला झुला रही हूँ।''

थोड़ी देर में बच्चे को दूध पिलाने जैसी चेष्टा करने लगी।

''अब क्या कर रही हो ?''

''बेटा भूखा है, सोता नहीं है तो दूध पिला रही

भारत के सबसे सुनियोजित
धर्मांतरणकारी तंत्र का हुआ पर्दाफाश

हाल ही में आंध्र प्रदेश स्थित गैर-सरकारी संस्था 'इंडिया रूरल इवैंजेलिकल फेलोशिप' का विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम के अंतर्गत प्रदत्त अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) निलम्बित किया गया। जाँच में सामने आया कि संस्था को अपनी अमेरिका और यू.के. स्थित शाखाओं से २०१९ से २०२४ के बीच २८ करोड़, ६० लाख रुपये विदेशी अनुदान के रूप में प्राप्त हुए।

विदेशी ताकतों द्वारा कई ऐसी गैर-सरकारी संस्थाओं को करोड़ों-अरबों रुपये भेजे जा रहे हैं, जो मानव-कल्याण के कार्य करके समाज को जोड़ रही हैं ऐसा दिखता है परंतु पर्दे के पीछे की सच्चाई यह है कि वे विदेशी धन से हिन्दुओं का धर्मांतरण करके भारत को तोड़ने का घिनौना खेल रच रही हैं। हाल ही में आंध्र प्रदेश स्थित गैर-सरकारी संस्था 'इंडिया रूरल इवैंजेलिकल फेलोशिप' का विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम के अंतर्गत प्रदत्त अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) निलम्बित किया गया। जाँच में सामने आया कि संस्था को अपनी अमेरिका और यू.के. स्थित शाखाओं से २०१९ से २०२४ के बीच २८ करोड़, ६० लाख रुपये विदेशी अनुदान के रूप में प्राप्त हुए। जाँचकर्ताओं के अनुसार यहाँ मानवता की सेवा की आड़ में भारत का सबसे सुनियोजित और रणनीतिक रूप से निर्मित तंत्र कार्य कर रहा था, जो विदेशी धन का उपयोग धर्मांतरण के लिए कर रहा था। पूर्व में भी इस प्रकार के १३ अन्य गैर-सरकारी संस्थानों के अनुज्ञापत्र निलम्बित किये जा चुके हैं।

इस संदर्भ में जोशुआ प्रोजेक्ट का नाम भी

वनस्पतियों के पत्तों के स्वास्थ्य-लाभ

हमारे आसपास के कई पौधों के पत्ते केवल हरियाली का साधन नहीं बल्कि आरोग्यदायी औषधियों का भंडार हैं। प्राचीनकाल से ही पत्तों का उपयोग करके विभिन्न रोगों का उपचार किया जाता रहा है। कुछ स्वास्थ्यवर्धक पत्तों की जानकारी :

(१) घृतकुमारी (ग्वारपाठा, Aloe vera) के पत्ते : ये स्निग्ध, शीतल, जठराग्निवर्धक, बल, पुष्टि व वीर्य वर्धक तथा कफ-पित्तशामक हैं। ये पेटदर्द, प्लीहा (spleen) व यकृत (liver) की वृद्धि, कृमि, कब्ज, पुराना बुखार, खाँसी, रक्तविकार के साथ मधुमेह (diabetes), हृदयरोग आदि जटिल व्याधियों में भी लाभकारी हैं।

✲ पत्ते के १० से १५ ग्राम गूदे अथवा १० से २० मि.ली. रस* में २० मि.ली. आँवला रस* मिला के सुबह खाली पेट लेने से रक्तगत शर्करा (blood sugar) नियंत्रित रखने में मदद मिलती है।

✲ अतिरिक्त कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने हेतु भी उक्त प्रयोग बहुत सहायक है। साथ में हृदयसुधा* लेने से विशेष लाभ होगा।

✲ घृतकुमारी यकृत की सफाई का कार्य कर शुद्ध रक्त का निर्माण करती है जिससे सम्पूर्ण शरीर की शुद्धि हो के रोगों की निवृत्ति में मदद मिलती है। यकृत की कार्यप्रणाली में सुधार होने से पाचन-संबंधी कई समस्याएँ, जैसे भूख न लगना, पेट साफ न होना, कृमिरोग में यह लाभकारी है।

✲ त्वचा में जलन हो अथवा त्वचा जल गयी हो, घाव हो, पित्त बढ़ने से खुजली हो - घृतकुमारी के गूदे को त्वचा पर लगाने से राहत मिलती है।

मात्रा : रस - १० से २० मि.ली. तथा गूदा (pulp) - १०-१५ ग्राम

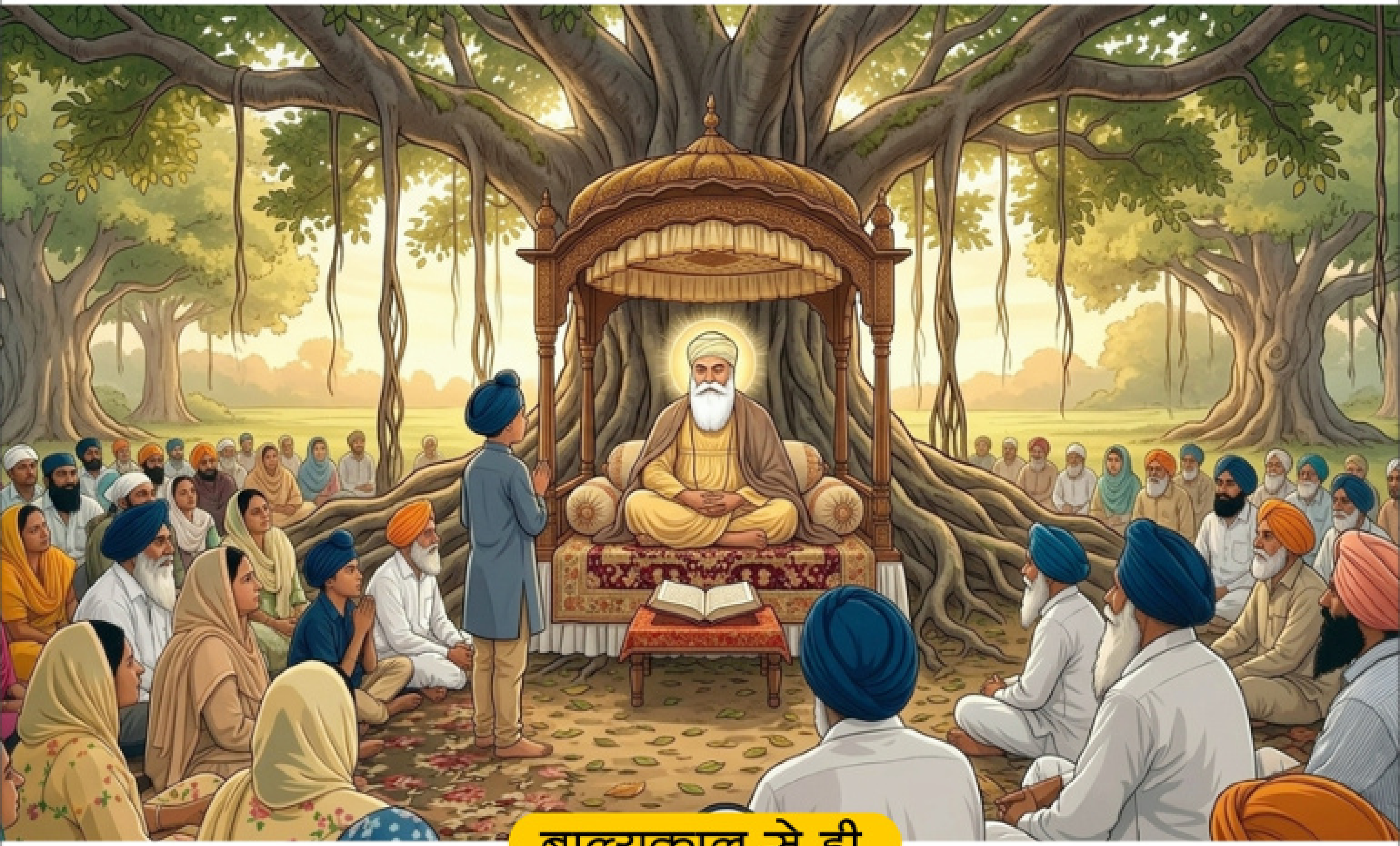

बाल्यकाल से ही

भक्ति का प्रारम्भ

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

गुरु नानकजी के सत्संग में एक लड़का प्रतिदिन आता था। सत्संग प्रारम्भ हो उसके पहले सत्संग-मंडप में बैठ जाता था। ऐसा नहीं कि गुरुजी के आने के बाद दौड़-दौड़ के आ जावे। गुरुजी आयें उसके पहले वह जगह ले लेता था। गुरुजी सत्संग करके विदा हों उसके बाद जाता था और गुरुदेव के जाते समय बड़े अदब से हाथ जोड़े खड़ा रहता था।

गुरु नानकजी ने देखा कि 'बड़े-बड़े तीसमार-खाँ भी कथा में बाद में आते हैं और जिनके सिर पर काल नाच रहा है - आज मरे या कल मरे ऐसे लोग भी कभी कथा में आते हैं, कभी नहीं आते हैं परंतु उभरते हुए आयुष्य में यह बच्चा कथा में आता है और मेरे आने के पहले बैठ जाता है।'

एक दिन बाबाजी ने उसे बुलाया : ''बेटे ! इतना नन्हा-सा है और इतना एकतान होकर कथा सुनता है। सत्संग चालू होने के पहले आता है और बाद में जाता है। बोल तू क्या चाहता है ?''

लड़का बोला : ''महाराज ! मैंने तो कथा में से ही सुना कि सारे कर्म स्वार्थ से करना यह बनियों का काम है। क्या भगवान की कथा भी किसी स्वार्थ से सुननी चाहिए ? भगवान अपने हैं इसलिए नहीं सुननी चाहिए ? अपने हैं, प्यारे हैं तो प्यारे का वर्णन सुनने में आनंद आता है। प्यारे का नाम लेने में आनंद आता है। और कथा में कल्याण होता है ऐसा भी मैंने सुना है।''

''अभी तू बच्चा है। तेरे को कथा में आने की प्रेरणा किसने दी, रुचि कैसे हुई ?''

''बाबा ! आप पूछते हैं तो मैं बताता हूँ। मेरी माँ ने कहा : ''चूल्हा जला ! पानी गरम करना है।''

महिलाओं हेतु विशेष सत्साहित्य

इनमें आप पायेंगे : ✻ वास्तविक सौंदर्य प्राप्त करने की कुंजी ✻ युवतियाँ, महिलाएँ कैसे अपने जीवन का सर्वांगीण विकास कर उन्नत हो सकती हैं ? ✻ महान आत्मा को अपने घर में लाने की युक्ति ✻ सुख-शांतिमय गृहस्थ जीवन हेतु आवश्यक जानकारी ✻ व्यावहारिक जीवन में सफलता के लिए मार्गदर्शन

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य ! पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

हरड़ रसायन गोली

यह अपचित भोजन को पचानेवाला त्रिदोषशामक उत्तम रसायन योग है । इन गोलियों को चूसने से भूख खुलती है । ये संचित कफ को नष्ट करती हैं ।

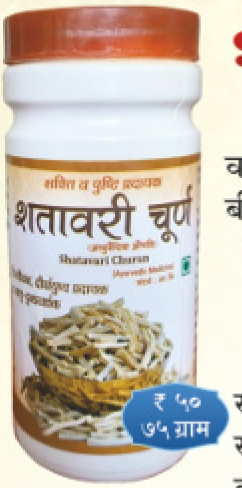

शतावरी चूर्ण

चिरयौवन, दीर्घायुष्य प्रदायक व मातृ-दुग्धवर्धक

यह वीर्य, बुद्धि व रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक, चिरयौवन व दीर्घायुष्य दायक, वजन-वृद्धिकर तथा नेत्र एवं हृदय हेतु हितकर श्रेष्ठ औषधि है । यह वीर्य-संबंधी बीमारियों, अत्यधिक मासिक स्राव, वंध्यत्व आदि में लाभदायी है ।

संजीवनी टेबलेट

यह गोली व्यक्ति को शक्तिशाली, ओजस्वी, तेजस्वी व मेधावी बनाती है । इसमें सभी रोगों का प्रतिकार करने तथा उन्हें नष्ट करने की प्रचंड क्षमता है । यह श्रेष्ठ रसायन-द्रव्यों से सम्पन्न होने से सप्तधातुओं व पंचज्ञानेन्द्रियों को दृढ़ बनाकर वृद्धावस्था को दूर रखती है । हृदय, मस्तिष्क व पाचन-संस्थान को विशेष बल प्रदान करती है । इसमें तुलसी-बीज होने से सभी उम्रवालों के लिए यह बहुत लाभदायी है ।

शहदयुक्त त्रिफला टेबलेट

ये गोलियाँ श्रेष्ठ रसायन, बलप्रद एवं पौष्टिक हैं । ये नेत्रों के लिए हितकर, वर्ण एवं स्वर को उत्तम करनेवाली, वीर्यवर्धक, भूख बढ़ानेवाली व रुचिकारक हैं । इनके नियमित सेवन से मस्तिष्क-रोग, दंतरोग, हृदयरोग एवं गुर्दों (kidneys) की विभिन्न बीमारियों से रक्षा होती है । ये चर्मरोग, मोटापा, दमा, खाँसी, कब्ज, पेट का फूलना, अजीर्ण आदि में भी लाभदायी हैं ।

प्राणदा टेबलेट

ये गोलियाँ दमा (asthma) को समूल नष्ट करती हैं । पुरानी खाँसी, न्यूमोनिया, फेफड़े के आवरण में सूजन (pleurisy), पुराना जुकाम आदि श्वसन-संस्थान के अनेक रोगों व हृदय-विकारों में लाभदायी हैं ।

पुदीना अर्क

यह पाचक, रुचिकारक, भूखवर्धक, स्फूर्तिदायक व चित्त को प्रसन्न करनेवाला है । पेट के विकारों, जैसे - अरुचि, भूख न लगना, अजीर्ण, अफरा (gas), उलटी, दस्त, हैजा एवं कृमि में यह विशेष उपयोगी है । बुखार, खाँसी, सर्दी-जुकाम, मूत्राल्पता तथा श्वास व त्वचा-रोगों में भी लाभदायी है ।

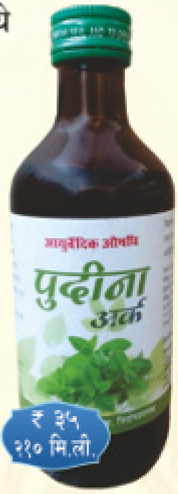

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ७३५९१९३७५२. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18^{th} to 25^{th} of every month.
Publishing on 15^{th} of every month

करोड़ों का हृदय छलका, विश्वपटल पर चमका

मातृ-पितृ पूजन दिवस

अहमदाबाद

इंदौर

बिनका (ओड़िशा)

साकोली, जि. भंडारा (महा.)

करोलबाग-दिल्ली

जमशेदपुर

धमतरी (छ.ग.)

पटना

कोल्वाले (गोवा)

दमोह (म.प्र.)

बेंगलुरु

हिसार (हरि.)

बजराकोट, जि. पुरी (ओड़िशा)

पटियाला (पंजाब)

हैदराबाद

बीड (महा.)

घोरपड, जि. नागपुर (महा.)

वापी (गुज.)

राजनांदगाँव (छ.ग.)

छिंदवाड़ा (म.प्र.)

कोलकाता

बालोद (छ.ग.)

लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)

हालेंग, जि. ऊपरी सियांग (अ.प्र.)

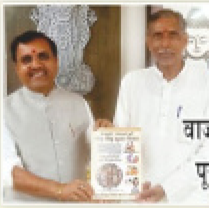
गुज. के शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमन भाई वाजा जी को मातृ-पितृ पूजन पुस्तिका देते हुए

विदेशों में

वेलिंग्टन (न्यूजीलैंड)

टोरंटो (कनाडा)

ब्रिस्बेन (ऑस्ट्रेलिया)

भैरहवा (नेपाल)

सैन जोस-कैलिफोर्निया (यू.एस.ए.)

कैलिफोर्निया (यू.एस.ए.)

जनकपुर (नेपाल)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी